

स्विट्ज़रलैंड

बिना देश के लोगों का पासपोर्ट

1922 में खोजी फ़्रिडयोफ़ नानसेन ने देशविहीन शरणार्थियों को एक पासपोर्ट दिया। लगभग 450,000 जारी हुए।

कहाँ जिनेवा

कौन फ़्रिडयोफ़ नानसेन, एक नॉर्वेजियन खोजी जिन्होंने देशविहीन शरणार्थियों के लिए पासपोर्ट बनाया

कब 1921 से 1938

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

पहले विश्व युद्ध के बाद सीमाएँ खिसक गईं और सरकारें गिर गईं। बहुत से लोगों के पास कोई पासपोर्ट नहीं रहा। 1921 में सोवियत सरकार ने विदेश में रह रहे रूसियों की नागरिकता छीन ली। इससे लगभग 800,000 शरणार्थी बिना किसी देश के रह गए। काग़ज़ों के बिना वे सीमाएँ पार नहीं कर सकते थे, और कई फँस गए।

शुरुआती विश्व संस्था राष्ट्र संघ ने फ़्रिडयोफ़ नानसेन से मदद माँगी। नानसेन एक नॉर्वेजियन वैज्ञानिक और ध्रुवीय खोजी थे। वे ग्रीनलैंड की भीतरी बर्फ़ पार करने वाले पहले व्यक्ति थे। वे लड़ाई के बाद लगभग 450,000 युद्धबंदियों को घर भी लाए थे। उन्होंने 1921 और 1922 के रूसी अकाल में राहत का नेतृत्व भी किया। 1921 में वे शरणार्थियों के पहले उच्चायुक्त बने।

> युद्धबंदियों की वापसी में, अंतरराष्ट्रीय राहत कार्य में और राष्ट्र संघ के शरणार्थी उच्चायुक्त के रूप में उनकी अग्रणी भूमिका के लिए
>
> फ़्रिडयोफ़ नानसेन के लिए नोबेल पुरस्कार का प्रशस्ति-कथन, 1922

एक सरल दस्तावेज़

जुलाई 1922 में नानसेन ने जिनेवा में एक सम्मेलन बुलाया। सरकारें बिना देश वाले शरणार्थियों के लिए एक पहचान-पत्र पर सहमत हुईं। यह जल्द ही “नानसेन पासपोर्ट” कहलाने लगा। इससे शरणार्थी सीमाएँ पार कर सकते थे।

शुरू में यह रूसी शरणार्थियों के लिए था। 1924 में इसे आर्मेनियाई लोगों तक बढ़ाया गया। 1928 में इसमें असीरियाई, बुल्गारियाई और तुर्की शरणार्थी भी आ गए। 1942 तक 52 देशों की सरकारें इसे मानती थीं।

800,000

1921 में जिन रूसी शरणार्थियों की नागरिकता रद्द हुई

52

वे देश जिनकी सरकारों ने पासपोर्ट माना

450,000

जारी किए गए पासपोर्ट, Wikipedia के अनुसार

एक नाम जो टिका रहा

तब तक उनके कार्यालय ने सैकड़ों हज़ार शरणार्थियों की देखभाल की थी। उसने ऐसे तरीक़े अपनाए जो आगे चलकर मानक बने: देखभाल, घर वापसी, नए घर और समाज में जगह। नानसेन का 1930 में निधन हो गया। काम शरणार्थियों के लिए नानसेन अंतरराष्ट्रीय कार्यालय के तहत चलता रहा। 1938 में कार्यालय ने अपने प्रयासों के लिए नोबेल शांति पुरस्कार जीता।

Wikipedia संगीतकार इगोर स्ट्राविंस्की और लेखक व्लादिमीर नाबोकोव को ऐसा पासपोर्ट रखने वालों में गिनाता है।

आज कोई नानसेन पासपोर्ट जारी नहीं करता। देश और संयुक्त राष्ट्र अब शरणार्थियों को यात्रा-पत्र देते हैं।

कब क्या हुआ

- **1921** नानसेन राष्ट्र संघ के शरणार्थियों के पहले उच्चायुक्त बनते हैं।
- **1922** जिनेवा का एक सम्मेलन शरणार्थियों के पहले पहचान-पत्र पर सहमत होता है।
- **1928** पासपोर्ट असीरियाई, बुल्गारियाई और तुर्की शरणार्थियों तक बढ़ाया जाता है।
- **1930** नानसेन का निधन होता है। नानसेन अंतरराष्ट्रीय कार्यालय उनका काम जारी रखता है।
- **1938** कार्यालय को नोबेल शांति पुरस्कार मिलता है। नानसेन पासपोर्ट का दौर ख़त्म होता है।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

एक काग़ज़ ने लोगों को वह चीज़ लौटाई जो उन्होंने खो दी थी: आने-जाने का हक़।

नानसेन ने सही नियमों का इंतज़ार नहीं किया। उन्होंने सरकारों से एक सरल दस्तावेज़ मानने को कहा, और कई ने माना।

हमारी राय

एक छोटे काग़ज़ी प्रमाणपत्र ने सैकड़ों हज़ार लोगों को नए सिरे से शुरू करने का मौक़ा दिया।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 पहले छोटी रुकावट दूर कीजिए

बिना काग़ज़ों के शरणार्थी सीमाएँ पार नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने उन्हें एक काग़ज़ दिया।

यह आज़माएँ: अपने किसी जानने वाले को रोकने वाला कोई फ़ॉर्म या नियम खोजिए। उन्हें उससे पार निकलने में मदद कीजिए।

2 लोगों को एक मेज़ पर लाइए

उन्होंने सरकारों को जिनेवा बुलाया, और वे एक दस्तावेज़ पर सहमत हुईं।

यह आज़माएँ: किसी समस्या से जुड़े लोगों को एक बातचीत में बुलाइए।

3 एक समूह से शुरू कर फैलाइए

पासपोर्ट रूसी शरणार्थियों से शुरू हुआ और बाद में दूसरों तक पहुँचा।

यह आज़माएँ: एक विचार को एक समूह पर आज़माइए। जब वह चले, तो उसे बढ़ाइए।

4

अपना नाम दूसरों को उधार दीजिए

एक मशहूर खोजी ने अपनी साख उन लोगों की मदद में लगाई जिनकी कोई हैसियत नहीं थी।

यह आज़माएँ: अपना हुनर या अपना नाम किसी ऐसे के लिए लगाइए जिसके पास कुछ नहीं है।

साथ ले जाने वाली एक बात

पासपोर्ट एक वादा हो सकता है कि कोई अब भी दुनिया का हिस्सा है।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

Nobel Prize Outreach
Fridtjof Nansen – Biographical

Nobel Prize Outreach
Fridtjof Nansen – Facts

Wikipedia
Nansen passport

तथ्य-जाँच नोट: नोबेल पुरस्कार के पन्ने और Wikipedia मुख्य कहानी पर सहमत हैं। कहानी जिनेवा में रखी गई है, जहाँ 1922 का सम्मेलन हुआ (Wikipedia), पर नानसेन नॉर्वेजियन थे। 1921 का नागरिकता का फ़ैसला और लगभग 800,000 शरणार्थियों का आँकड़ा Wikipedia से हैं। नानसेन की नियुक्ति: नोबेल की जीवनी कहती है कि जून 1921 में राष्ट्र संघ की परिषद ने शरणार्थियों के लिए उच्चायोग बनाया और उन्हें उसे चलाने को कहा; नोबेल तथ्य-पन्ना कहता है कि वे 1922 में पहले उच्चायुक्त बने; कहानी जीवनी का अनुसरण करके 1921 कहती है। 3 से 5 जुलाई 1922 का जिनेवा सम्मेलन और आर्मेनियाई लोगों (1924) तथा असीरियाई, बुल्गारियाई और तुर्की शरणार्थियों (1928) तक विस्तार Wikipedia से हैं। पासपोर्ट मानने वाले देश: नोबेल की जीवनी कहती है कि उसे “अंततः बावन सरकारों ने मान्यता दी”; Wikipedia कहता है कि 1942 तक 52 देश। लगभग 450,000 पासपोर्ट दिए गए, यह Wikipedia से है और कहानी में उसी के नाम से कहा गया है; नोबेल की जीवनी अलग से कहती है कि नानसेन ने 450,000 युद्धबंदियों को वापस भेजा, जो एक अलग आँकड़ा है जो संयोग से मेल खाता है। ग्रीनलैंड पार करने वाले पहले व्यक्ति का दावा नोबेल तथ्य-पन्ने से है (“ग्रीनलैंड की भीतरी बर्फ़ पार करने वाले पहले”)। 1921

और 1922 में अकाल राहत, और उनके कार्यालय के तरीक़े तथा उसके द्वारा देखभाल किए गए सैकड़ों हज़ार शरणार्थी नोबेल की जीवनी से हैं ("ऐसे तरीक़े जो क्लासिक बनने थे: देखभाल, वापसी, पुनर्वास, पुनर्स्थापन, प्रवास, एकीकरण")। 1930 में नानसेन का निधन और नानसेन अंतरराष्ट्रीय कार्यालय को 1938 का नोबेल शांति पुरस्कार Wikipedia और नोबेल के पन्नों से हैं। उद्धरण नानसेन के 1922 के शांति पुरस्कार का नोबेल प्रशस्ति-कथन है, जो नोबेल तथ्य-पन्ने पर है। इगोर स्ट्राविंस्की और व्लादिमीर नाबोकोव के नाम Wikipedia की प्रमुख धारकों की सूची से हैं; उस सूची पर सूचना है कि उसे और संदर्भ चाहिए, और स्ट्राविंस्की का संदर्भ नॉर्वे के राष्ट्रीय अभिलेखागार की एक प्रदर्शनी का है जिसे हमने नहीं खोला, इसलिए कहानी उसे Wikipedia के नाम से कहती है। UNHCR का इतिहास-पन्ना 403 देता है और नहीं खुल सका। पिन जिनेवा दिखाता है। "हमारी राय" वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।